International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(6): 18-20
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 08-11-2025
Accepted: 17-11-2025
Publish : 18-11-2025

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर – 560077

Correspondence:
डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर – 560077

कर्नाटक संस्कृति का प्रतिबिंब - वृक्षमाता तिमक्का

डॉ. सैयद मुईन

कर्नाटक में पर्यावरण की बात आते ही सबसे पहले सालुमरदा (पेड़ों को पंक्ति में लगाने वालि) तिमक्का का नाम दिमाग में आता है। उन्हें वृक्षमाते के नाम से भी जाना जाता है। तिमक्का, जिन्होंने वर्षों पहले सैकड़ों पौधे लगाकर पर्यावरण के लिए योगदान दिया था, उनके द्वारा लगाए गए पौधों के कारण सालुमरदा तिमक्का नाम मिला। पर्यावरण के लिए सालुमरदा तिमक्का के योगदान को जानने के बाद कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने उन्हें सम्मानित किया है। वह अपने पति की याद में एक अस्पताल बनवाने का सपना देखती थीं, हालाँकि अधिकारियों ने इस पर आपत्ति जताई। 14 नवंबर को लगभग 114 वर्ष की आयु में बेंगलुरु में उनका निधन हो गया। बरगद के पेड़ आज भी मौजूद हैं—जड़ें और शाखाएँ उस महिला के दुःख और अनुग्रह से जुड़ी हुई हैं जिसने उन्हें जन्म दिया था।

तिमक्का का जन्म तुमकुर जिले के गुब्बी तालुका में हुआ था। उनके पिता चिक्करंगैया और माता विजयम्मा थीं। चूँकि वह स्कूल नहीं जा सकती थीं, इसलिए तिमक्का पहले मवेशी चराती थीं। बाद में, उन्होंने पास की एक खदान में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम किया। लगभग 12 साल की उम्र में उन्होंने चिक्कैया नाम के एक पशुपालक से शादी कर ली। चिक्कैया रामनगर जिले के मागडी तालुका के हुलिकल गाँव से थीं।

इतने सालों से शादीशुदा होने के बावजूद, तिमक्का की कोई संतान नहीं थीं। इसलिए, संतान न होने के दुःख को भुलाने के लिए, तिमक्का ने सड़क के किनारे बरगद के पौधे लगाने शुरू कर दिए। तिमक्का ने कुदुर से हुलिकल तक जाने वाले राज्य राजमार्ग 94 पर बरगद के पौधे लगाए। तिमक्का के गाँव के पास बरगद के पेड़ बहुतायत में थे। तिमक्का और उनके पति ने इन पेड़ों से पौधे रोपना शुरू किया। पहले साल, पड़ोसी गाँव कुदुर के पास 4 किलोमीटर लंबी पट्टी में 10 पौधे लगाए गए। दूसरे साल 15 पौधे और तीसरे साल 20 पौधे लगाए गए।

तिमक्का दंपत्ति ने अपनी अल्प आय से ये पौधे लगाए। पति-पत्नी दोनों पौधों को पानी देने के लिए 4 किलोमीटर तक बाल्टियों में पानी ढोते थे। वे पौधों को चरने वाले मवेशियों के खतरे से बचाने के लिए उन्हें काँटेदार झाड़ियों से ढक देते थे। जब उन्हें लगा कि पानी की कमी के कारण पौधे कमज़ोर हो रहे हैं, तो उन्होंने मानसून के मौसम में ज़्यादा पौधे लगाने शुरू कर दिए। तिमक्का के पति का 1991 में निधन हो गया। दुःख से उबरकर, तिमक्का को फिर से पेड़ों में सुकून मिला। बाद में, उन्होंने नए जोश के साथ उनकी देखभाल शुरू कर दी।

तिमक्का ने अपने खर्चे पर 8,000 पौधे लगाए हैं। आज इनकी कीमत 15 लाख रुपये से ज़्यादा आंकी गई है। कर्नाटक सरकार ने अब पेड़ों का प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया है। निरक्षर होने के बावजूद, तिमक्का ने पर्यावरण संरक्षण में बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने आने वाली पीढ़ी के कल्याण को ध्यान में रखते हुए पेड़ों को पानी दिया और उनकी देखभाल की। पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करने वाली तिमक्का ने इस संबंध में कई विरोध प्रदर्शनों में भी भाग लिया है।

2019 में, जब एच. डी कुमारस्वामी मुख्यमंत्री थे, बागेपल्ली-हलागुरु रोड (मांड्या ज़िला) पर राजमार्ग के चौड़ीकरण के लिए पेड़ों को काटने का प्रस्ताव था (तिमक्का और उनके पति ने इस स्थान पर 385 बरगद के पेड़ लगाए थे)। तिमक्का ने राजमार्ग के चौड़ीकरण का विरोध किया था। तिमक्का के

दबाव में आकर, सरकार ने वैकल्पिक मार्गों का रुख किया, जिससे 70 वर्षों से पोषित पेड़ों की जान बच गई। पर्यावरण के क्षेत्र में तिमक्का के योगदान को कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने सराहा है। भारत सरकार ने उन्हें 2019 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें भारत के राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। लॉस एंजिल्स और ओकलैंड, कैलिफ़ोर्निया, अमेरिका में तिमक्का रिसोर्सेज फॉर एनवायर्नमेंटल एजुकेशन नामक एक पर्यावरण संगठन का नाम उनके नाम पर रखा गया है।1995 में राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार, 1997 में इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार और 1997 में ही वीर चक्र पुरस्कार से सम्मानित। तिमक्का को कर्नाटक सरकार के महिला एवं बाल कल्याण विभाग से मान्यता प्रमाण पत्र और भारतीय वृक्ष-कृषि एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है।

इसके अलावा, वृक्षमाता को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जैसे 2000 में कर्नाटक कल्पवल्ली पुरस्कार, 2004 में गॉडफ्रे फिलिप्स वीरता पुरस्कार, पम्पापति पर्यावरण पुरस्कार, बाबासाहेब अम्बेडकर पुरस्कार, वनमाते पुरस्कार, श्रीमाता पुरस्कार, कर्नाटक पर्यावरण पुरस्कार, राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार, राज्योत्सव पुरस्कार और कई अन्य।

इसके अलावा, उन्हें नाडोजा पुरस्कार (2010), राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार (1995), इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार (1997), वीर चक्र पुरस्कार (1997) और हम्पी विश्वविद्यालय द्वारा कर्नाटक कल्पवल्ली पुरस्कार (2000) सहित कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

2016 में, बीबीसी ने तिमक्का को दुनिया की सबसे प्रभावशाली और प्रेरक महिलाओं में से एक बताया था। इस साल की शुरुआत में, कर्नाटक सरकार ने तिमक्का को कैबिनेट स्तर का दर्जा दिया। सरकार ने तिमक्का को पर्यावरण दूत नियुक्त किया।

अपनी वृद्धावस्था में भी, तिमक्का अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के बावजूद, वह कॉलेजों सहित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेती रहती थीं। वह इन कार्यक्रमों में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती थीं। सफलता पाने के लिए किसी डिग्री, सहयोग या अवसर की आवश्यकता नहीं होती। तिमक्का इस बात का उदाहरण हैं कि अगर आपमें सभी के लिए अच्छा करने का दृढ़ संकल्प है, तो आप दुनिया को बदलने की ताकत बन सकते हैं। तिमक्का एक ऐसी महिला हैं जिन्होंने अपने अवसर खुद बनाए और सफलता हासिल की। उनकी उपलब्धियां चिरस्थायी रहेंगी।

यह देखा जा सकता है कि यह पत्र लोगों के बीच एक प्रार्थना के रूप में है, जिसमें सभी से अपने पेड़ों की संपत्ति और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए कहा गया है, जैसे कि उन्होंने अपनी वसीयत लिखी हो।

“आपकी प्यारी दादी वृक्षा माता सालूमरदा तिमक्का की ओर से मेरे प्यारे देश के लोगों को प्रणाम। इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है। जब तक आप जीवित हैं, किसी को परेशान न करें, हिंसक न हों, गरीब, अमीर, भिखारी, असहाय न हों, सभी को समान रूप से रहना चाहिए। सभी का सम्मान करें, सभी से प्रेम करें, देश से प्रेम करें, अगर देश अच्छा है, तो सभी सुंदर हैं।

चाहे आप युवा हों, वृद्ध हों, गरीब हों, अमीर हों, पेड़ लगाएँ और उन्हें वृक्ष बनाएँ, गौशालाएँ बनाएँ, और झीलें बनाकर पशुओं के लिए पानी उपलब्ध कराएँ। फलदार पेड़ उगाएँ और पक्षियों के लिए भोजन का स्रोत बनें। देश में सभी अच्छे हों। देश अच्छा हो। गरीबों के साथ भेदभाव न करें। सभी मनुष्य समान हैं, भूखे को भोजन दें। पेड़ लगाने और बचाने का जो काम मैंने किया है, उसे जारी रखें, और मेरा बेटा उमेश पूरे देश में पेड़ लगाता रहे और उनकी देखभाल करता रहे।

एक बार फिर, ईश्वर सभी का भला करे, सभी पर सतिपति का आशीर्वाद बना रहे। आपको संतान की प्राप्ति हो, आपका घर सुखमय हो शुभ हो, देश मंगलमय हो, आपके सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, सभी लोग पेड़ लगाएँ। मेरे पति, ईश्वर और मेरा आशीर्वाद मेरे बेटे पर बना रहे, सबका कल्याण हो।

इस संदेश में तिमक्का ने सभी से सभी को समान समझने, पर्यावरण से प्रेम करने और अपना कार्य जारी रखने का आग्रह किया है। अपने बेटे उमेश का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने पूरे देश में वृक्षारोपण के कार्य का विस्तार करने का आग्रह किया है। देश के सच्चे शासक, सालूमरदा तिमक्का के इस "अंतिम संदेश" के शब्दों को देखते ही मुझे अचानक लक्ष्मीधर अमात्य (लक्ष्मीधरमात्य) का शिलालेख याद आ गया, जो विजयनगर के प्रथम देवराय (1410 ई.) के मंत्री थे।

इस भूमि को सच्चा गौरव दिलाने वाले सभी महान लोग कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो उन्हें उस भूमि को छोड़ने से पहले मनुष्य होने के नाते अवश्य करनी चाहिए जिस पर वे खड़े थे। ऐसा कहने का अर्थ है कि उन्होंने ऐसा करने का प्रमाण छोड़कर योग्यता अर्जित की है। ऐसा कहने वालों की सूची लंबी है।

लक्ष्मीधरमात्य (1410 ई.) से सालूमरदा तिमक्का (1911 से 2025) तक पहुँचे इन शब्दों को पढ़ें।

""झील बनाओ, कुआँ खोदो, मंदिर बनवाओ,

अनाथों को कैद से मुक्त करो, मित्रों का सहायक बनो,

विश्वासियों का आश्रय बनो, धर्मात्माओं की रक्षा करो।

ये वे शब्द हैं जो लक्ष्मीधरमात्य की माँ ने उन्हें दूध पिलाते हुए उनके कान में फुसफुसाए थे अपने प्यारे बच्चे को देश/राज्य बनाने का तरीका सिखाते हुए, वह महान माँ अपने बेटे का पालन-पोषण करती है! (फरवरी 1410 ई., मधुर कवि विरचित द्वारा लक्ष्मीधर के

जन्म पर प्रसिद्ध शिलालेख, कर्नाटक साम्राज्य के संस्थापक, मादारसा (विद्यारण्य) सायण की बहन, सिंगम्बिके ने अपने बालक लक्ष्मीधर को गोद में लेकर उसे अपना दूध पिलाते हुए यह लोरी गाई थी! लक्ष्मीधर्मात्यायन के शब्द हम्पे में कदलेकालु (मूंगफली)गणेश मंदिर के सामने लगे शिलालेख की पंक्ति 44 और 45 में हैं।) जब बचपन से ही घर में ऐसे संस्कारों का पोषण किया जाता है, तो ये संस्कार बच्चों में अंकुरित होते हैं। एक शिक्षक का लक्ष्य न केवल छात्रों में ज्ञान का संचार करना है, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करना भी है।

कर्नाटक अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पर्यटन स्थलों और वास्तुकला के लिए जितना प्रसिद्ध है, उतना ही अपने त्याग, उदारता, नैतिक मूल्यों और विश्वव्यापी दृष्टिकोण के लिए भी प्रसिद्ध है।

पर्यावरण संरक्षण अब केवल एक दिन की गतिविधि नहीं रह गया है। वर्तमान समय की माँग है कि यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बने। पर्यावरण को अपने जीवन का अंग बनाने का अर्थ है कि हम सादा जीवन अपनाएँ। जैसे-जैसे जीवन सरल होता जाता है, पर्यावरण पर दबाव कम होता जाता है। इस दृष्टि से, गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत हमारा मार्ग होना चाहिए। महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा केवल मानवता तक ही सीमित नहीं है, इसमें प्रकृति भी शामिल है। हालाँकि, सादगी अपनाने के लिए हमें आधुनिकता द्वारा प्रदान किए गए लाभों से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। यह व्यावहारिक भी नहीं है। हमें अनावश्यक वस्तुओं का ढेर लगाने के लिए प्रोत्साहित करने वाली वस्तु संस्कृति पर अंकुश लगाना ही पर्याप्त है, और पर्यावरण के स्वास्थ्य को काफी हद तक बेहतर बनाया जा सकता है।

माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए धन और ज़मीन छोड़ने के लिए तरसते हैं। हालाँकि, आज के लोगों को अगली पीढ़ी के लिए जो अमूल्य योगदान देना चाहिए - 'स्थायी पर्यावरण', वह यह है कि हम चाहे कितनी भी संपत्ति जमा कर लें, अगर हम रहने योग्य पर्यावरण के बिना चले गए, तो जीवन नरक बन जाएगा। 'जिस दिन हम धरती पर आए, हमें अपने आस-पास के वातावरण को इससे थोड़ा और सुंदर बनाना चाहिए और यहीं से जाना चाहिए, यही वह आदर्श वाक्य है जिसने मेरे जीवन का मार्गदर्शन किया है। क्या होगा अगर, मेले में आने वाले और मेला खत्म होने के बाद जाने वाले लोगों की तरह, वे अपनी इच्छाओं को उस धरती पर बिखेर दें, जहाँ उन्होंने खाया और आनंद लिया है? क्या होगा अगर हम खुद वहाँ वापस न जाएँ? हमारे बच्चे वहाँ आकर क्या सोचेंगे? क्या होगा अगर इस देश को चलाने वाले बुजुर्गों में इतना सोचने की बुद्धि नहीं है? उस प्रश्न के उत्तर में, उनके लिए उनके कर्म क्या पर्याप्त हैं? जीवन की धारा का कर्म व्यक्ति से बंधा होता है। सामूहिक कर्म जो व्यक्ति द्वारा प्रभावित होता है। शिवराम कारंत का जीवन के बारे में मानना है कि 'उस समूह के अच्छे और बुरे साझा होते हैं और जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की होती है।' इस जागरूकता का पालन व्यक्तियों और समूहों दोनों को करना चाहिए। एक स्थायी पर्यावरण एक स्थायी जीवन का प्रतिबिंब है।

प्रासंगिक पुस्तकें

1. कन्नड़ साहित्यिक इतिहास - संपादक- डॉ. जी. एस. शिवरुद्रप्पा, बैंगलोर विश्वविद्यालय, बैंगलोर, 1980